वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष - २६ जनवरी - २०२६ प्रकाशन - ०१

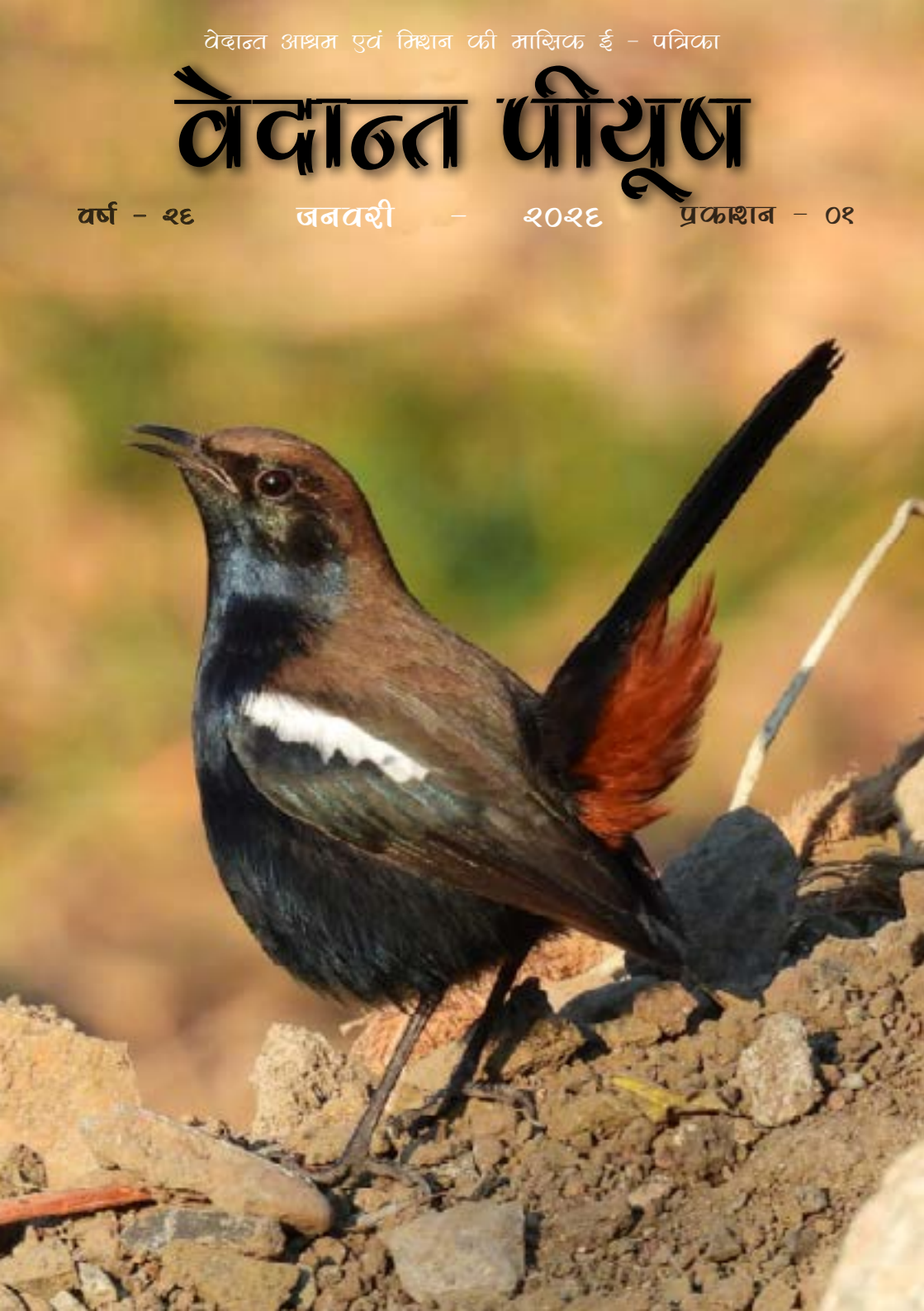

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

जनवरी २०२६

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

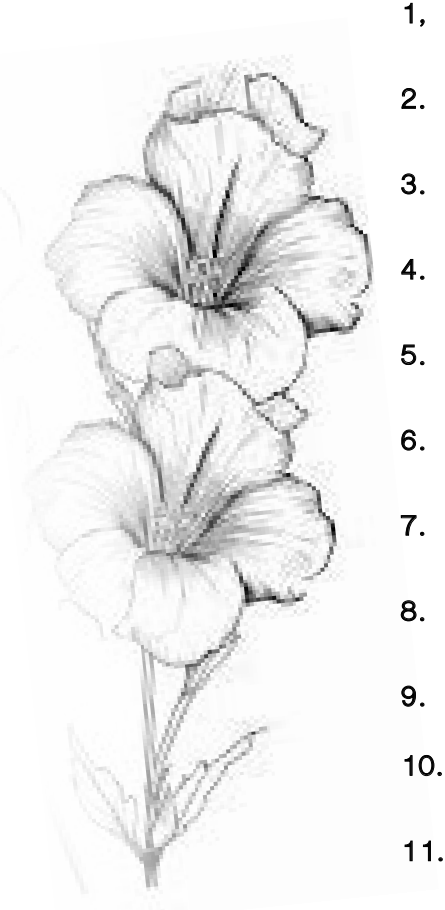

1,	प्रकाशक पृष्ठ	02
2.	श्लोक	05
3.	पू. गुरुजी का संदेश	06
4.	वाक्यवृत्ति	14
5.	गीता और मानवजीवन	19
6.	जीवन्मुक्त	24
7.	श्री कैकेयी चरित्र	28
8.	कथा-सेतुबन्धे तु रामेशं	31
9.	आश्रम-मिशन समाचार	35
10.	आगामी कार्यक्रम	69
11.	इण्टरनेट समाचार	73
12.	लिन्क	74

जनवरी 2026

आत्मबोध

श्लोक : ५४

यल्लाभान्नापरो लाभो
यत्सुखान्नापरं सुखम्।
यज्ज्ञानान्नापरं ज्ञानं
तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत्॥

जिससे अधिक इस जगत् में न कोई लाभ है, न उससे बढ़कर कोई सुख है, तथा उससे महान् कोई ज्ञान नहीं है, उसे ही ब्रह्म जानों।

सन्देश

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

बहुआयामी कर्म

केवल मनुष्य ही कर्म कर सकता है :

मनुष्य ही कर्म कर सकता है, पशु नहीं। केवल शारीरिक गतिविधि को कर्म नहीं कहा जा सकता। कर्म वह क्रिया है जिसमें हमारे पास चयन की स्वतंत्रता होती है– करने की, न करने की या उसे भिन्न प्रकार से करने की। इसलिए कर्म एक सचेत, जानबूझकर किया गया कार्य है, न कि पूर्व-निर्धारित या प्रोग्राम्ड प्रतिक्रिया। अन्य सभी जीव प्रोग्राम्ड होते हैं, इसलिए उनका व्यवहार अनुमानित होता है; परन्तु मनुष्य ऐसा नहीं है।

अधिकांश मनुष्य भी अपने संस्कारों और आदतों से संचालित होते हैं, इसलिए वे भी काफी हद तक अनुमानित हो जाते हैं। फिर भी, मनुष्य सीख सकता है, बदल सकता है – यदि वह वास्तव में बदलना चाहे।

बहुआयामी कर्म

<u>कर्म – क्रिया में स्वतंत्रता :</u>

जो प्राणी प्रतिक्रिया देने के लिए स्वतंत्र है, वही पुण्य या पाप कर्म अर्जित करता है। वही कर्म वास्तव में उसका कर्म कहलाता है। एक कम्प्यूटर, चाहे वह कितनी ही बड़ी सेवा क्यों न कर रहा हो, कभी पुण्यात्मा नहीं कहलाता।

यदि कोई कार्य अनजाने में हुआ हो और न्यायालय में यह सिद्ध हो जाए कि वह जानबूझकर नहीं किया गया था, तो वह दंडनीय नहीं होता, क्योंकि तकनीकी रूप से वह उसका सचेत कर्म नहीं है। कर्म करने की क्षमता स्वतंत्रता की पहली सीढ़ी है। जब तक यह स्वतंत्रता नहीं आती, तब तक हमारे संस्कार और कण्डिशिनंग ही हमारे जीवन को नियंत्रित करते हैं। हम अच्छे या बुरे कार्यो के लिए भी कण्डीशन्ड हो सकते हैं।

आतंकवादी ब्रेशवॉश किए हुए होते हैं और रोबोट की तरह आदेशों का पालन करते हैं। अच्छे संस्कार अपने आप में अच्छे कर्म नहीं है, परन्तु वे व्यक्ति को धीरे-धीरे स्वतंत्रता खोजने में सहायक होते हैं। कर्म एक सचेत कार्य है, जो करने या न करने की स्वतंत्रता से उत्पन्न होता है। कर्म में सीख है, और यही धीरे-धीरे पूर्ण स्वतंत्रता के द्वार तक ले जाती है।

बहुआयामी कर्म

कर्म की सम्भावनाएं :

जब व्यक्ति कर्म करना सीख लेता है, तब उसे कर्म की बहुआयामी सम्भावनाओं को भी समझना चाहिए। विद्वानों ने कर्म से चार प्रकार के परिणाम बताए हैं– आप्यम्, उत्पाद्यम्, विकार्यम् और संस्कार्यम्। अर्थात् कुछ प्राप्त करना, कुछ नया उत्पन्न करना, किसी वस्तु या स्थिति में परिवर्तन करना और अन्ततः शुद्धिकरण करना।

आप्यम् :

आप्यम् में हम अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कुछ प्राप्त करने का लक्ष्य रखते हैं। यह कर्म की सबसे स्पष्ट और प्रचलित क्षमता है। लक्ष्य निर्धारित करना और उसके लिए श्रेष्ठतम प्रयास करना–यही इसका सार है। लक्ष्य जितना बडा होता है, प्रेरणा उतनी ही अधिक होती है। प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना चाहिए और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं व इच्छाओं को पूरा करना चाहिए।

हर सांसारिक लक्ष्य के साथ चुनौतियां आती हैं। इसलिए समर्पण, एकाग्रता, दृढ़ता, उत्साह और टीम–भावना अत्यन्त आवश्यक गुण बन जाते हैं।

बाद में लक्ष्य बदल सकते हैं, पर ये गुण जीवनभर काम आते हैं। सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति की प्रेरणा आवश्यकता और जिम्मेदारी से होनी चाहिए, न कि अंधे अहंकार से। अहंकारजन्य प्रेरणा इच्छाओं को अंतहीन बना देती है और कर्म की अन्य संभावनाओं से हमें वंचित कर देती है।

प्राप्ति तभी सार्थक है जब व्यक्ति अपने आपको अभावगस्त मानता है। जैसे जैसे यह अभाव घटता है, वैसे वैसे यह लक्ष्य भी खतम होता जाता है। ज्ञानी पुरुषों के कर्म में सांसारिक प्राप्ति का आकर्षण नहीं होता; उनके पास केवल उत्साह और आत्मविश्वास जैसे गुण रहते हैं।

उत्पाद्यम् :

उत्पाद्यम् के लिए रचनात्मकता आवश्यक है। कुछ नया रचना- इसके लिए सूक्ष्म और सहज बुद्धि चाहिए। रचनात्मकता का अर्थ है कि ऐसा कुछ उत्पन्न करना-जो वास्तव में नया और अनूठा हो, न कि केवल पुराने तत्वों का संयोजन। चाहे कला हो, तकनीक हो, कृषि हो या शोध- हर जगह एक प्लस फेक्टर चाहिए। अधिकांश लोग केवल सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने में लगे रहते हैं, बहुत कम लोग कुछ नया सृजन करते हैं।

अहंकारजन्य महत्वाकांक्षाएं रचनात्मकता में बाधा डालती हैं। सच्चे रचनात्मक लोग अपने पास जो है, उसमें संतुष्ट होते हैं और इसलिए नए क्षेत्रों की खोज कर पाते हैं। वे घिसे-पिटे रास्तों पर चलने से संतुष्ट नहीं होते।

विकार्यम् :

विकार्यम् का अर्थ है परिवर्तन - बेहतर के लिए या बदतर के लिए। हमारे पास अपने स्वास्थ्य, आदतों, समाज और यहां तक कि पूरे विश्व को बदलने की क्षमता है। परंतु अधिकांश लोग अपने मन को जड़, असंवेदनशील और नीरस बना लेते हैं। शिक्षा प्रणाली और अंधानुकरण पर आधिरित मूल्य-प्रणालियां इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। अंधा अंधे का अनुकरण करता हुआ संसार को और अधिक अंधकार व अशांति की और ले जाता है। यह सब हमारे कर्म की ही सम्भावनाएं है। हमारी अज्ञानता और मूर्खताओं के लिए कोई और जिम्मेदार नहीं है। हम स्वयं अपने सबसे अच्छे मित्र या सबसे बड़े शत्रु हैं। जो लोग निरंतर परिवर्तन करते रहते हैं, वे भीतर से स्वयं को पूर्ण नहीं मानते। इसलिए वे यह सोचते रहते हैं कि स्थिति 'क' से 'ख' बेहतर होगी। ऐसे लोग बहिर्मुखी और पर निर्भर है।

संस्कार्यम् :

संस्कार्यम् कर्म की चौथी और अद्भुत क्षमता है–परंतु इसे अंतिम लक्ष्य के रूप में बहुत कम लोग अपनाते हैं। संस्कार्यम् का अर्थ है शुद्धिकरण – केवल और केवल शुद्धिकरण। इसमें प्राप्ति का कोई बोझ नहीं होता। यह जीवनदर्शन पर आधारित होता है। ऐसे लोग वास्तव में मानते हैं कि गहराई में वे पूर्ण हैं – अनंत के साथ एक हैं। अनंत अपने स्वभाव से ही सर्वव्यापक है; वही कालातीत सत्य हर वस्तु का मूल सार है। वही सबका वास्तविक मैं है।

सीमित से अनंत तक पहुंचना जोड़ने से संभव नहीं है; कितनी भी बडी संख्या जोड़ ली जाए, परिणाम सीमित ही रहेगा। इसलिए बाहर से कुछ प्राप्त करने के लिए जीवन को समर्पित करना निरर्थक है, विशेषकर तब तक जब सब कुछ नश्वर है। अपने जीवन–निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुओं के लिए वे प्रेमपूर्वक, सब के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। कर्मफल स्वाभाविक रूप से और सहजता से प्राप्त हो जाता है। वे ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं; सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, परं बुद्धिमान्, जो न केवल उत्पन्न करते हैं बल्कि हमारे जीवन का संचालन भी करते हैं। फिर उस चीज के लिए क्यों

संघर्ष करें, जिसकी व्यवस्था पहले से ही सुचारु रूप से हो रही है?

यदि कालातीत सत्य यहीं और अभी विद्यमान है, तो केवल एक सूक्ष्म और सात्विक बुद्धि की आवश्यकता है, जो उसे जान सके। यही वह स्थान है जहां कर्म की भूमिका आती है। कर्म ही मन को शुद्ध करता है; नकारात्मक कर्म मन और बुद्धि को मलिन करते हैं। यही मार्ग योगियों और भक्तों के लिए हैं।

जीवन-दर्शन :

योगी एकाग्रता के साथ मन की शुद्धि के लिए कर्म करते हैं, ताकि मन सूक्ष्म और सात्विक बन सकें। अंततः यह लक्ष्य भी निरर्थक हो जाता है। उसके बाद संन्यास होता है- न कोई शुद्धि का प्रयास, न कोई प्राप्ति - केवल गहन चिंतन और 'जो है' उसकी यथार्थता का रसास्वादन, न कि 'जो होना चाहिए' की कल्पना।

वे वेदान्त में रमण करते हैं- आत्मज्ञान के विज्ञान में साक्षात्कार किए महापुरुषों के सान्निध्य में। इस लक्ष्य की ओर पहला कदम है - कर्म की संस्कार्यम् क्षमता को समझना, अपनाना और उससे प्रेरित होना।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – 30

निरस्तातिशयानन्द
सत्यः प्रज्ञानविग्रहः।
सत्तास्वलक्षणः पूर्णः
परमात्मेति गीयते॥

जो निरतिशय आनन्द स्वरूप, सत्य और ज्ञान स्वरूप सत्ता है, तथा पूर्ण है, उसे ही परमात्मा कहा गया है।

वाक्य वृत्ति

आचार्य इस श्लोक में भी तत् पद का अर्थ ही बता रहे हैं। तत् पद ही परमात्मा है। परमात्मा को यहां निरतिशय आनन्द कहा गया है।

निरतिशय अर्थात् निरस्त अतिशय आनन्द। जितने भी विषयसुख वा अनुभवजनित सुख है, वे सभी सातिशय आनन्द के अन्तर्गत आते है, क्योंकि उसमें उतार-चढ़ाव और क्रम भी होता है। सुख की वृत्ति को भी सुख की अधिकता-न्यूनता के अनुरूप तीन प्रकार से बताई जाती है। वह है - प्रिय, मोद और प्रमोद। जब किसी इष्ट विषय का स्मरण होता है, उस समय मन में आह्लाद की अनुभूति होती है, उसे प्रिय वृत्ति कहा। जब इष्ट विषय की प्राप्ति हो जाती है, तब सुख में भी वृद्धि का अनुभव होता है, उसे मोद वृत्ति कहा। और अन्ततः उसे विषय के भोग का जो आनन्द होता है, उसे प्रमोद वृत्ति कहा। प्रमोद वृत्ति विषयसुख में आनन्द का

अतिरेक है। किन्तु यह भी क्षणिक अनुभूति ही होती है। इस सुख की अनुभूति के साथ हम यह कहते है कि कि 'मैं सुखी हूं'; 'मैं बहुत सुखी हूं' इत्यादि। अर्थात् जो सुख हम जानते हैं, वह क्रमिक और परिवर्तनशील है। उसमें अधिकता और न्यूनता का भेद होता है।

इसके अलावा तैत्तिरीय उपनिषद् में मनुष्य का, देवताओं का, पितृ आदि के आनन्द का तारतम्य भी बताया जाता है। यह सब आनन्द किसी बाह्य परिस्थिति पर निर्भर भोग्य पदार्थ का आनन्द है। अतः जितनी परिस्थिति की क्षणिकता है, वैसे ही यह आनन्द भी क्षणिक है। तथा भोज्य की प्राप्ति से भोक्ता की संकुचिता, सीमितता समाप्त नहीं होती है। अतः आनन्द भी क्षूद्र है।

परमात्मा को निरतिशयानन्द बताकर यह कहा जा रहा है कि उसमें कोई भोक्ता-भोज्य का भेद नहीं होने से, उसमें संकुचिता आदि का अभाव है, अतः पूर्णस्वरूप है। यह हमारी आत्मा है, हमसे पृथक् नहीं है। इस प्रकार बताकर आचार्य हमारा परमात्मस्वरूप बता रहे है।

सत्य प्रज्ञानविग्रहः सत्ता स्वलक्षणः - अर्थात् उपनिषद् में जिसे सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म बताया है। विग्रह का अर्थ है स्वरूप जो कि सत्य और प्रज्ञान है। सत्ता का अर्थ सत्य स्वरूप, परं वास्तविकता और प्रज्ञान अर्थात् शुद्ध चैतन्य। यह स्वयं सत्य स्वरूप है, किसी पदार्थ की सत्ता नहीं किन्तु स्वयं सत्यस्वरूप है। हम जो जीव रूप से विद्यमान है तथा अन्य जो कुछ भी है - उन सब का अस्तित्व उसीसे सत्ता प्राप्त करने से है। जीव तथा जीव की समस्त उपाधि चेतनवान् प्रतीत होती है वह भी इसीकी वजह से चेतनवान् होती है। किन्तु वह स्वयं न किसीसे सत्ता प्राप्त करता है न चेतनवान् होता है। क्योंकि वह स्वयं सत्य, चित् अर्थात् प्रज्ञानस्वरूप है। इससे अन्यत् किसीका भी स्वतंत्र रूप से अस्तित्व नहीं होने से अपने आपमें पूर्ण स्वरूप है। इस प्रकार इस श्लोक में आचार्य ने तत् पद को परमात्मा बताते हुए उसका सच्चिदानंद स्वरूप दिखाया।

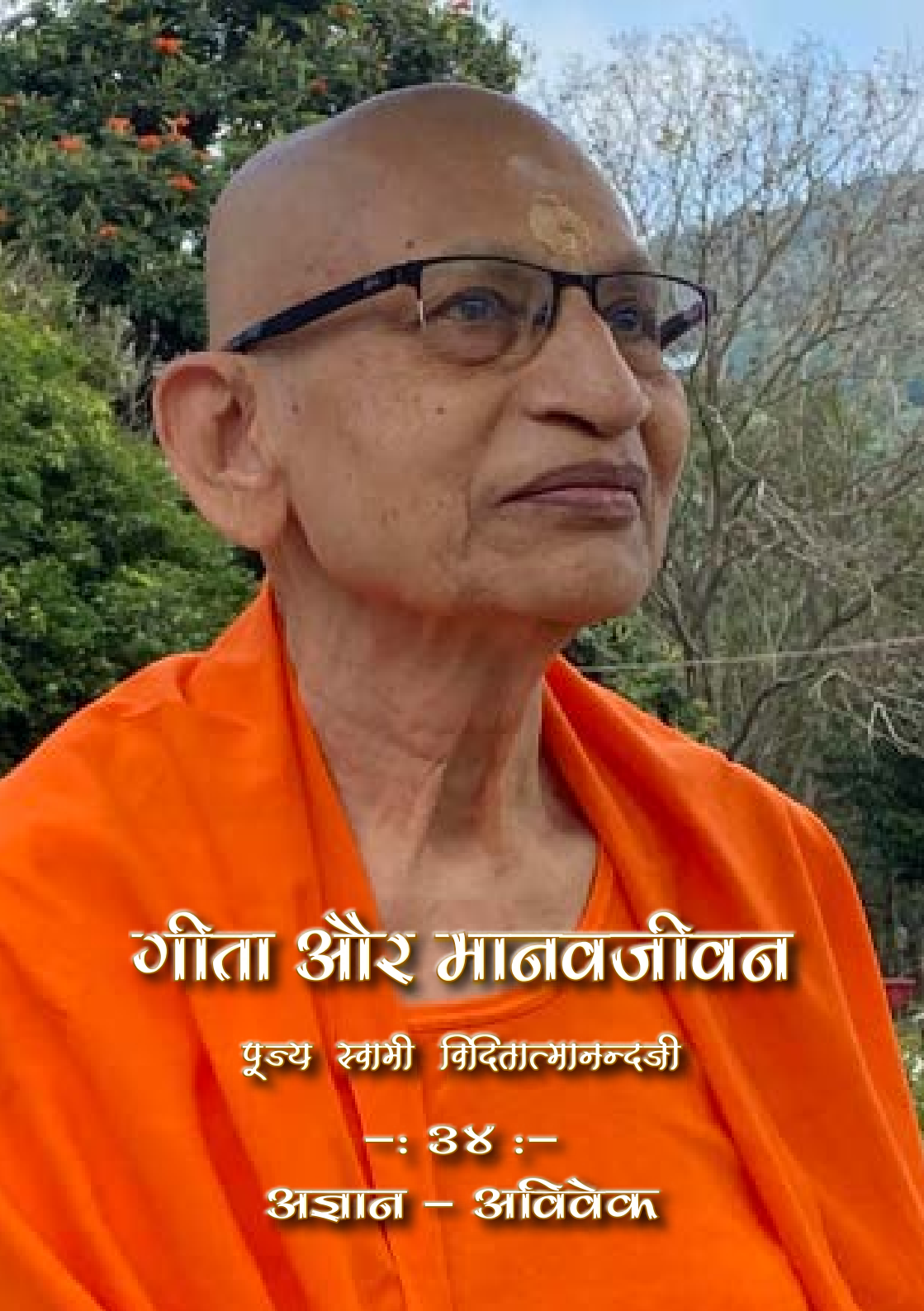

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

–: ३४ :–

अज्ञान – अविवेक

गीता और मानवजीवन

जगत में लोग विविध प्रकार की मनोकामना से प्रेरित होकर विविध प्रकार की सेवा-उपासना करते हैं। कोई भूत-प्रेत की, तो कोई यक्ष-राक्षस की, तथा कोई देवताओं की, और कोई तो विविध विषयों की उपासना करते है। ये सब है तो उपासक ही। स्वयं जो इच्छा रखते है, उसकी प्राप्ति के लिए जिन व्रत-नियमों का पालन करना पड़ता है, वह सभी करते है। प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिए या चुनाव जीतने के लिए कई प्रकार के व्रत करते है कि नहीं?

जिनमें विवेक नहीं है, वे क्षणिक फल के लिए यत्न करते हैं। भगवान कहते हैं कि, 'जो देवताओं का भजन करते है, वे उन देवताओं को प्राप्त करते है, जो पितृओं का भजन करते है, वे पितृओं का, जो भूतों

का यजन करते हैं, वे भूत को प्राप्त करते है और जो मेरा भजन करता है, वो मुझे ही प्राप्त करता है।' इन सब में प्रयास समान होने पर भी फल में भिन्नता है। जब हमें जीवन में विवेक नहीं होता है, तो हम जानते नहीं है कि हमें क्या चाहिए है, जीवन में हम क्या खोज रहे हैं! क्या मात्र धन-सम्पत्ति से हमें संतोष प्राप्त होगा? या प्रतिष्ठा, मान-सन्मान से हमें संतोष होगा? क्या जगत में ऐसा कोई भी मनुष्य जन्मा है, जिसे हर प्रकार से संतोष हो? जिन्होंने यह सब पूर्ण मात्रा में प्राप्त किया है, उसे पूछें कि इन सबसे उनको संतोष हुआ है? यह सब सिद्धियां तो है? किन्तु वे सब अल्प है। और अल्प वस्तु मनुष्य को संतुष्ट कभी भी नहीं कर सकती, क्योंकि वह तो पूर्ण को, अनन्त को खोज रहा है।

प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही जाने-अन्जाने में एक ही वस्तु की खोज कर रहा है, और वह है अनन्त की खोज। अनन्त अस्तित्व की, अनन्त ज्ञान की और अनन्त आनन्द की अर्थात् पूर्णता की खोज। और जब तक उसकी प्राप्ति नहीं होती है, तब तक उनकी यात्रा रुकनेवाली नहीं है। जन्म-जन्मान्तर की यात्रा चलती ही रहेगी।

गीता और मानवजीवन

हमें पूर्णता की चाह है, फिर भी धन-सम्पत्ति, प्रतिष्ठा इत्यादि अनेक अल्प विषय के पीछे हम क्यों दौड़ रहे हैं? इसलिए, क्योंकि मुझमें विवेक नहीं है। प्रत्येक मनुष्य अज्ञानी ही जन्मा होने से उसे ज्ञान नहीं है कि वह कौन है और क्या चाहता है! भगवान ने हमारी इन्द्रियां बहिर्मुख बनाई होने के कारण इच्छा की पूर्ति के लिए हम सदैव बाहर ही झांकते रहते है। मनुष्य कभी भी अपने अन्दर नहीं देखता है कि जिसे वो खोज रहा है, वह अन्दर है कि नहीं। किसी को शान्ति चाहिए है, सुख चाहिए है, किसीको पूर्णता चाहिए है, इसका अर्थ यह हुआ कि सब स्वयं को अशान्त, दुःखी, अपूर्ण मानते हैं। आत्मा तो पूर्ण है, आनन्दस्वरूप है - सत्, चित्, आनंद है। किन्तु हमने सतत उन पर विपरीत आरोप लगाकर उसे दुःखी, संसारी, अशान्त मान लिया है। इसका अर्थ यह हुआ कि हमें आत्मा का ज्ञान नहीं है, सच्चिदानन्द का, ईश्वर का ज्ञान नहीं है। हमारा मूलभूत प्रश्न अज्ञान का है। और उसके कारण ही हम गलत मार्ग पर अग्रसर हुए है। और शान्ति की, सुख की खोज में चारों और भटकते है।

आनन्दस्वरूप आत्मा भीतर बैठा होने पर भी आनन्द के लिए हम बाहर भीख मांगे तो अन्दर विराजित आत्मा को कैसा खराब लगेगा? लगेगा ही न! हमारे पिता

करोडपति हो और हम पानवाले के पास सिगरेट उधार मांगे तो यह पिताजी का कैसा अपमान होगा? उसी प्रकार पूर्ण आनन्द अन्दर ही बैठा होने पर भी हम भेल-पुड़ी से आनंद मागे? कोई कहेगा, 'हे सम्पत्ति! हमें आनंद दें' कोई कहेगा कि, 'हे सत्ता! हमें आनंद दें।' कोई कहेगा कि, 'हे प्रतिष्ठा! हमें आनंद दें' कोई कहेगा कि, 'हे पुत्रों! हमें आनंद दो।' इस प्रकार हम भीख ही मांगते रहते हैं। यह हमारा अविवेक है। हमारा अज्ञान है। हम जानते नहीं है कि जीवन में हम जो चाहते हैं, वह तो अंतर में ही है, हमारा स्वरूप ही है, और बाहर से वह प्राप्त करना नहीं है, या मिलनेवाला भी नहीं है। जीवन के अनुभवों का विश्लेषण करें तब ही समझ में आता है कि इतना सबकुछ हमने प्राप्त किया तो भी हम याचक ही बने रहते है। याचना पूरी हो जाती है, किन्तु याचक यथावत् ही रह जाता है। और नई नई रचनाएं जन्म लेती रहती हैं। उसे पूरी करने के लिए हम अनेकों प्रकार का परिश्रम, उपासनाएं करते हैं।

यह परिश्रम अनंत आत्मा, जो अन्तर में ही विराजमान है, उसे प्राप्त करने के लिए करते हैं, जिससे कि अन्ततः यह याचक ही नष्ट हो जाएं और उसे किसी भी प्रयत्न की आवश्यकता ही न रहें। इस समझ का नाम ही है विवेक।

जीवनमुक्त

– ६७ –

बदरीनाथ

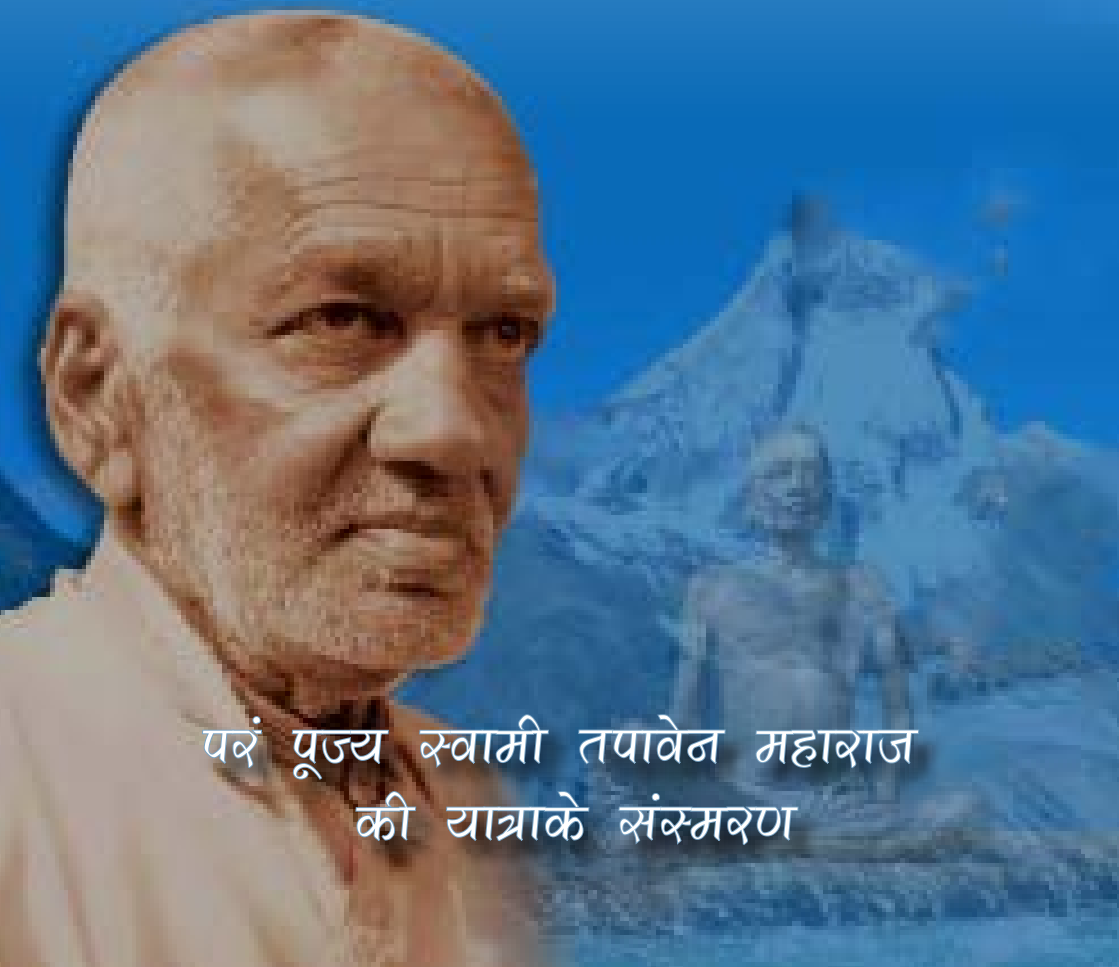

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

हृषीकेश से बदरीनाथ एक सौ सड़सठ मील दूर है। और केदारनाथ से लगभग एक सौ पन्द्रह मील। यद्यपि केदारनाथ और बदरीनाथ एक ही हिमाच्छन्न पर्वत श्रेणी में पास पास स्थित हैं, तथापि उस उंची हिमशैल माला से चलना असंभव हो जाता है। इसलिए अति दीर्घ, टेढ़े मेढ़े निम्न मार्गोसे चलना पडता है। विश्वनाथपुरी, गुप्तकाशी, बाणासुर की राजधानी जहां 'उषा–अनिरुद्ध' की घटना घटी थी, उखिमठ, दशमुख का तपःस्थान तुंगनाथ ये सभी विशिष्ट स्थान केदारनाथ के पास के मार्ग के बीच आते है। यह विश्वास किया जाता है कि केदारनाथ के पुजारियों का निवासस्थान उखिमठ़ भी शंकराचार्य द्वारा स्थापित है। बारह हजार फुट की उंचाई पर स्थित तुंगनाथ पर्वत कस्तुरी मृगों तथा मोनाल पक्षियों से अलंकृत है, और रमणीय वृक्षों से आच्छादित है।

हृषीकेश से मनोहारी वनांतरों से होकर महाभागा भागीरथी के किनारे से मार्ग उपर जाता है। 'पंच प्रयाग' नाम से प्रसिद्ध पांच प्रयाग बदरीमार्ग में प्राप्त होते है। इनके नाम- देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग और विष्णुप्रयाग। ये सभी विशिष्ट तीर्थस्थान समझे जाते है।

हृषीकेश से बदरी की ओर यात्रा करें तो चालीस मील दूर देवप्रयाग आ जाता है। गंगोत्री से निकलनेवाली भागीरथी गंगा के साथ बदरीनाथ से बहती आनेवाली अलकनन्दा का जहां संगम स्थल पर बैठकर तप करते थे, जिसकी स्मृति में यहां श्रीराम मंदिर की स्थापना की गयी है। कहा जाता है कि पुराण प्रसिद्ध कण्व महर्षि का आश्रम भी यहीं था। ये दोनों तीर्थ-नदियां शैल मालाओं के बीच से होकर पाषाणों को भेदती सी, ढकेलती सी, ढहाती और गिरती सी और शोर मचाती हुई प्रबलता के साथ बहती हुई यहां आकर मिल जाती है। इन तीर्थ नदियों का यह संगम स्थल अपने अनल्प दृश्य-वैचित्र्य के कारण यात्रियों के मन को मोह लेता है। यहां आकर परमेश्वर प्रीति और तीर्थ सेवा का अदृष्ट फल मिल जाता है। यहां से भागीरथी के पुण्यतट से गंगोत्री तथा अलकनंदा के

किनारे से बदरिकाश्रम की ओर मार्ग जाते हैं। देवप्रयाग से बीस मील दूर 'श्रीनगर' नामक एक छोटा नगर बसा है।

यहां से आगे बीस मील पूर्वोत्तर की ओर केदारनाथ से निकलने वाली मंदाकिनी जहां अलकनंदा में आ मिलती है यह रुद्रप्रयाग कहलाता है। यहां से आगे अठ़ारह मील की दूरी पर पिंडरा नदी और अलकनंदा के संगम पर कर्णप्रयाग स्थित है। प्रकृति देवी के ये दोनों विलास स्थान विलास रसिकों के चित्तों को अति प्रफुल्लित करते हैं। हरे भरे पर्वत पाशों से अलकनंदा के प्रेम भरे प्रणव गान को सुनते सुनते कुछ दूर और आगे बढें तो नन्दप्रयाग पहुंच जाते हैं। वहां से आगे दो तीन दिनों की यात्रा के पश्चात् विष्णुप्रयाग आ जाते हैं। विष्णुप्रयाग के निकट ही प्रसिद्ध 'ज्योतिर्मठ' स्थित है। यह प्रसिद्ध है कि ज्योतिर्मठ श्रीशंकरपाद के द्वारा प्रतिष्ठित किया गया था। यह भी कहा जाता है कि उनके शिष्यवरों में से एक शिष्य त्रोटकाचार्य ही वहां के प्रथम आचार्य के रूप में अभिषिक्त हुए थे। बदरीनाथ की मूर्ति की पूजा करनेवाले पुजारी केरल के नम्पूतिरि जी है, जो कि यहां छः मास से आये हुए है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री कैकेयी चरित्र

– ०४ –

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ सनेहू।।

श्री कैकेयी चरित्र

एक प्रश्न यह भी है कि कैकेयी राम को पुत्र के रूप में पाने के लिए इतनी व्यग्र क्यों है? वस्तुतः इसके पीछे भी मनोवैज्ञानिक रूप से अहं की भुख विद्यमान थी। वनगमन से पहले लौकदृष्टि में राम के यश की पताका सारे संसार में फहराने लगी। दूसरी ओर मूक समर्पण के कारण श्री भरत समाज की दृष्टि से ओझल थे। लोकैषण के कारण भी उनमें यह भावना उदित होती थी कि कितना अच्छा होता कि राम का जन्म मेरे गर्भ से हुआ होता। कैकेयी की भावुकता का सारा भवन अहं की नींव पर आधारित था। अहं की नींव किसी भी सद्गुण के लिए सब से दुर्लभ आधार है। नींव का अर्थ है स्वयं को पूरी तरह गाड़ देना। भवन की नींव आत्मगोपन और अपने समर्पण से ही किसी भवन को लोकदृष्टि से उठा सकती है। अहंकार आत्म-प्रदर्शन पर विश्वास रखता है। अतः नींव के स्थान पर स्वयं को शीर्ष स्थान पर

देखना चाहता है। ऐसी प्रतिकूल स्थिति में भवन की जो स्थिति हो सकती है वही स्थिति अहंकारी व्यक्ति के सद्गुणों की होती है। कैकेयी का व्यक्तित्व इसका ज्वलन्त दृष्टान्त है। इसलिए ज्यों ही उनके अहंकार पर आघात लगा, सद्भावनाओं का सारा भवन चूर-चूर हो गया। उनकी कोमलता और उदारता, निष्ठुरता और संकीर्णता में परिवर्तित हो गई। फिर उन्हें कोई बदल नहीं पाया। महाराज दशरथ की एकान्तिक आसक्ति, कैकेयी के प्रति प्रार्थना और दीनता-भरी मनुहार का भी उन पर रंचमात्र प्रभाव नहीं पड़ा।

महाराज श्री के मन में कैकेयी का जो कल्पित चित्र था, वे उसीको हृदय में बसाकर सांध्यबेला में कैकेयी के महल में पहुंचे। वे यह सोचकर आनंदमग्न हो रहे थे कि जब मैं राम के युवराज पद का समाचार कैकेयी को दूंगा तब वे कितनी प्रसन्न होंगी। मैं इस समाचार के बदले में कैकेयी से पुरस्कार की याचना करते हुए उन्हें अद्भुत रसमयी स्थिति में डाल दूंगा। अपने ही कल्पना के राज्य में विहार करते हुए दशरथ को कैकेयी के महल में जाते देखकर कवि व्यग्र स्वर में पुकार उठता है। ऐसा लगता है कि जैसे साकार स्नेह, मूर्तिमयी निष्ठुरता के भवन में प्रविष्ट हो रहा है।

कथा / प्रसंग

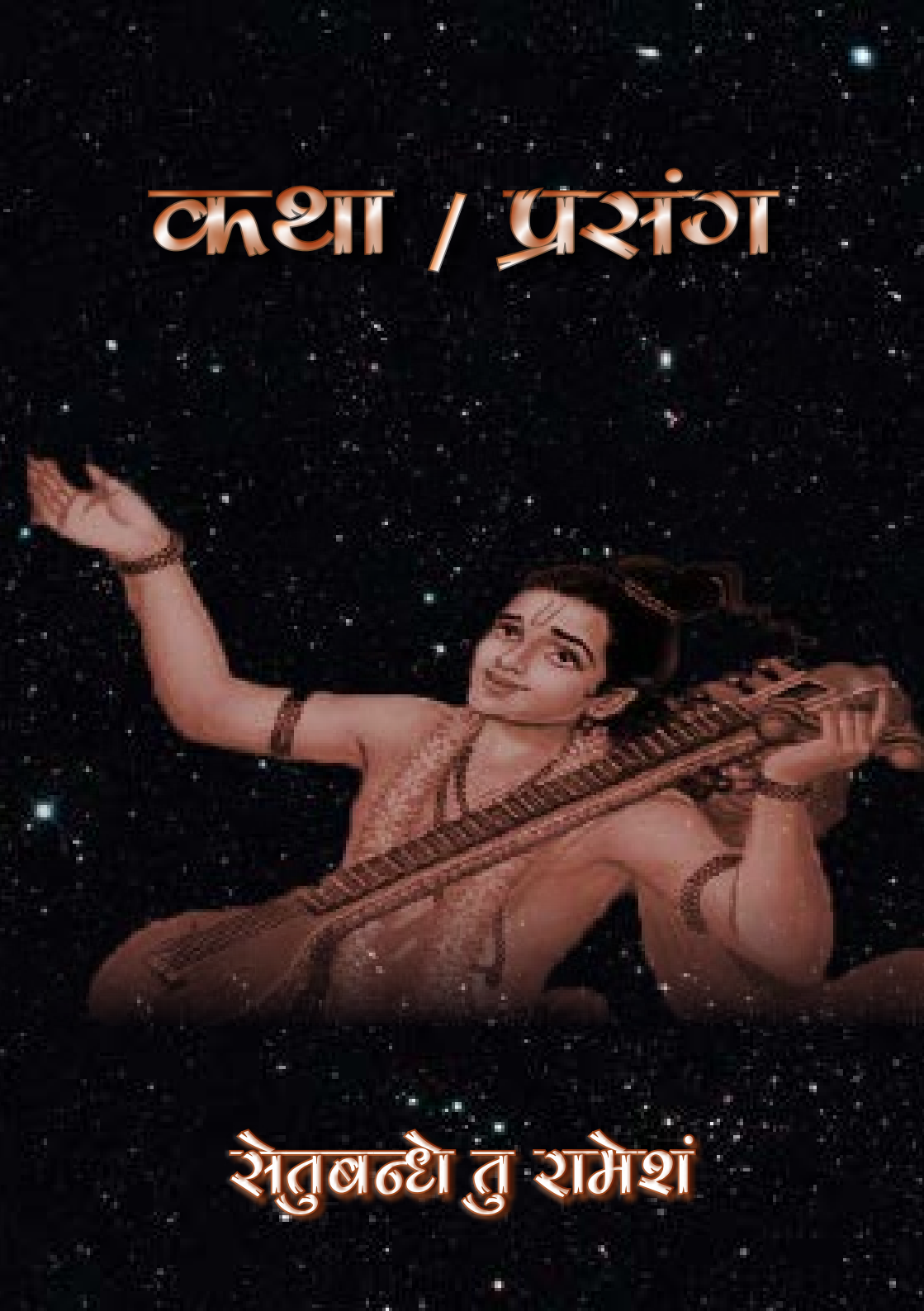

सेतुबन्धो तु रामेशं

सेतुबन्धे तु रामेशं

सेतुबन्धे तु रामेशं। द्वादश ज्योतिर्लिंग के अन्तर्गत एक ज्योतिर्लिंग है श्री रामेश्वर। इसका निर्माण स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने किया था। यह ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु के रामेश्वरम् नामक स्थान पर स्थित है। यह कथा शिव महापुराण में वर्णित है। बात उस समय की है, जब रावण माता सीता का हरण करके लंका ले गया था और सीता माता की खोज करने के लिए जब भगवान श्री राम तट पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि लंका समुद्र के ठीक उस पार है। इसे देखकर भगवान श्री राम असमंजस में पड़ गए और वे यह चिन्तन करने लगें कि समुद्र कैसे पार होगा, और कैसे रावण का वध होगा। वैसे तो भगवान श्री राम भगवान शिव के बहुत बड़े भक्त थे और हर रोज भगवान शिव की स्तुति किया करते थे किन्तु किसी कारणवश उनके सामने आई चुनौति की वजह से उस दिन वे भगवान शंकर की पूजा-अर्चना करना भूल गए थे। तभी अचानक उन्हें प्यास लगने लगी और उन्होंने पानी की गुहार लगाई। वहीं पर खड़ा एक वानर श्री राम के लिए मीठा

सेतुबन्धे तु रामेशं

जल ले आया। भगवान श्री राम जल को अपने मुंह में लगाने ही जा रहे थे कि उन्हें यह स्मरण हुआ कि आज तो उन्होंने भगवान शिव की पूजा-अर्चना की ही नहीं है। यह ध्यान में आते ही उसी समय उन्होंने वहीं पर अपने हाथों से भगवान शिव का पार्थिव शिवलिंग बनाकर पूजा अर्चना की और भगवान शिव से कहा कि, 'हे प्रभु! आपके सहयोग के बिना मेरा कार्य सिद्ध होना बहुत ही कठिन है आपके दिए हुए आशीर्वाद से रावण बहुत ही शक्तिशाली और अजेय हो गया है। आपसे मिले वरदान से वह हमेशा गर्वान्वित रहता है, आप अपने दास पर कृपा करें। ऐसा कहने पर भगवान शिव उनके समक्ष प्रगट हो गए और उनसे वरदान मांगने को कहा, तब श्री राम ने कहा कि, 'हे प्रभु मेरी जीत सुनिश्चित करें और लोककल्याण के लिए आप यहीं पर वास करें। फिर भगवान शिव ने श्री राम को वर दिया और वहीं पर वे ज्योति के रूप में समाहित हो गएं।

यह देखकर ब्रह्माजी, समस्त देवता, ऋषिगण आदि प्रकट हुए और उस शिवलिंग का नामकरण करते हुए कहा कि, आज से यह श्री रामेश्वर नामसे प्रसिद्ध होगा। यह सुनकर श्री राम ने उसकी व्याख्या करी 'रामस्य ईश्वरः' अर्थात् राम के स्वामी, रामेश्वर। वहीं पर भगवान

सेतुबन्धे तु रामेशं

शिवजी ने कहा कि रामः यस्य ईश्वरः इति रामेश्वरः। अर्थात् राम जिसके स्वामी है, वह रामेश्वर।

यह शिवलिंग प्रभु श्रीराम और भगवान शिव की अन्योन्य भक्ति और आदर का सूचक है। इसलिए कहा जाता है कि भगवान शिव के प्रति भक्ति के बगैर भगवान विष्णु की भक्ति प्राप्त नहीं हो सकती और भगवान विष्णु की भक्ति के बगैर शिवजी की भक्ति व कृपा प्राप्त नहीं होती।

भगवान विष्णु जहां प्रवृत्तिलक्षण धर्म के लिए आदर्श है तो शिवजी निवृत्तिलक्षण धर्म के। अर्थात् जीवन में दोनों का सन्तुलन होना अनिवार्य है, तो ही ज्ञान और भक्ति का पथ प्रशस्त होकर समस्त प्रकार का कल्याण सम्भव होता है।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

Gita Jayanti Celebrations

आश्रम / मिशन समाचार

Gita Bhavan-Indore

आश्रम / मिशन समाचार

Gita Diwas 14th Dec'25

आश्रम / मिशन समाचार

Gahana Karmano Gatihi

आश्रम / मिशन समाचार

Maam anusmar yuddhya cha

आश्रम / मिशन समाचार

Samatwam yoga uchyate

आश्रम / मिशन समाचार

Welcoming P.P. Guruji with Poorna Kumbh

Holistic Living celebrated as Gita Diwas

Deepjyotir Namostute

P. Sw. Amitanandaji welcoming all guests

Ganesh Vandana Nrutya

Flute recital by Salil Datey

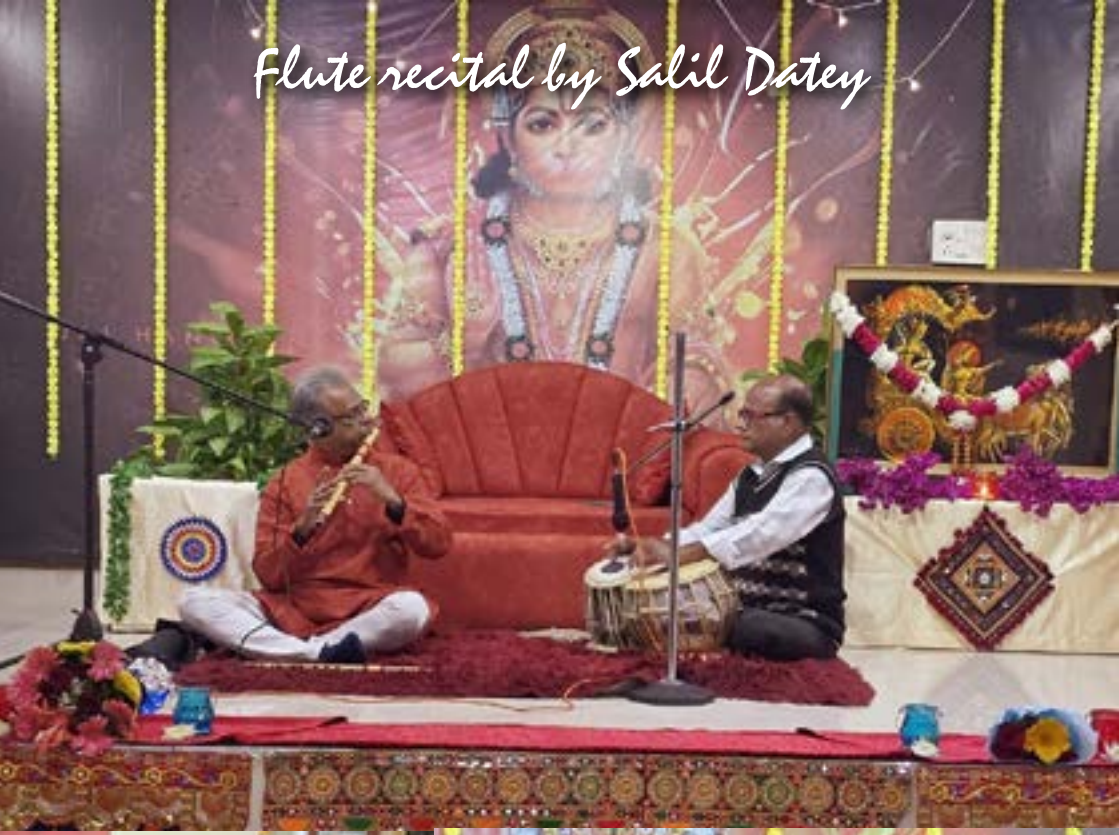

Veda Mantra Chant

आश्रम / मिशन समाचार

Vedic chants, Nritya, flute recital by Devotees

Tasmai Sri Gurave Namah

आश्रम / मिशन समाचार

Conclusion with Gita Arti

आश्रम / मिशन समाचार

Gita teaches Holistic Living

आश्रम / मिशन समाचार

Prasade sarva dukkhanaam
haanih asyopajaayate

आश्रम / मिशन समाचार

Sankirtanam

Joyous expression of devotion

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Live every moment holistically

आश्रम / मिशन समाचार

Communication, focus, luck and a relaxed mind

आश्रम / मिशन समाचार

15th Dec : Birthday of P.P. Guruji

आश्रम / मिशन समाचार

Abhisheka-Sri Gangeshwar Mahadev

Janani kritartha
Vasundhara punyavati cha tena

आश्रम / मिशन समाचार

Blessed are the ones who serve

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Subject: Tattva-Bodha

Online Vedanta Classes

Subject: Gita Chapter-7

आश्रम / मिशन समाचार

Om Sri Gurubhyo Namah

आश्रम / मिशन समाचार

Visit to the 'Aviary' in Indore Zoo

वेदान्त आश्रम, इन्दौर में आयोजित

गीता ज्ञान शिविर

दि. 10 से 15 फरवरी 2026 तक

(महाशिवरात्री पर्व – 15 फरवरी)

छ़ह दिवसीय आवासीय शिविर

विषय : गीता अध्याय ७
(ज्ञान विज्ञान योग)

ध्यान / संस्कृत / भजन / प्रश्नोत्तर

➔ स्थान : वेदान्त आश्रम
सुदामा नगर, इन्दौर

सम्पर्क : 7000361938
9329487329

➔ स्वच्छ स्थान

➔ सात्विक आहार

➔ अध्यात्म ज्ञान

सह आयोजक :

स्वामिनी अमितानन्दजी

स्वामिनी समतानन्दजी

स्वामिनी पूर्णानन्दजी

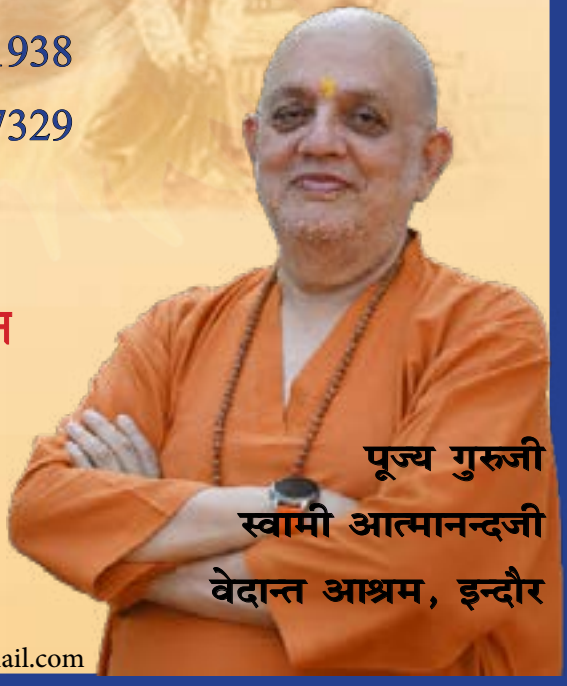

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी
वेदान्त आश्रम, इन्दौर

vmission.org.in / email : vashram.in@gmail.com

ऑनलाइन वेदान्त कक्षा

श्री रमण महर्षि विरचित

उपदेश सारम्

(UPADESH SAARAM)

आत्मज्ञान का सरल एवं सारगर्भित ग्रन्थ

वक्ता: स्वामिनी अमितानन्दाजी

- Google Meet (ऑनलाइन)
- प्रत्येक शनिवार
- सायं 4:00 बजे से
- हिन्दी

17 जनवरी 2026 से आरम्भ;
प्रति शनिवार सायं 4 बजे से

सभी जिज्ञासु साधकों का स्वागत है

ॐ "स्वस्वरूप की ओर एक यात्रा" ॐ

www.vmission.org.in / vashram.in@gamil.com

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

ओनलाईन सत्संग

प्रति शनिवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

भगवान रमण महर्षि विरचित उपदेश सारम्

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

एकादशी सत्संग

प्रति एकादशी को

on YouTube Channel

पूज्य स्वामिनी पूर्णानन्दजी द्वारा

INTERNET NEWS

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(☝ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (☛ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS/
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh ~ Jan '26

Vedanta Piyush ~ Dec'25

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore